

सत्र 11: व्यवस्थाविवरण 26

डॉ. सिंधिया पार्कर

यह डॉ. सिंधिया पार्कर और व्यवस्थाविवरण की पुस्तक पर उनका शिक्षण है। यह सत्र 11, व्यवस्थाविवरण 26 है।

परिचय: वह स्थान जिसे परमेश्वर चुनता है

तो, इस व्याख्यान के लिए, हम व्यवस्थाविवरण अध्याय 26 को देख रहे हैं। अध्याय 26 हमारे लिए कानून संहिता को समाप्त करने जा रहा है। और जैसे ही हम अध्याय 26 पढ़ना शुरू करेंगे हम देखेंगे कि चुना गया स्थान इस अध्याय में काफी प्रमुखता से शामिल होने वाला है। हमने अध्याय 18 के बाद से आधिकारिक तौर पर चुनी गई जगह नहीं देखी है। लेकिन जब हम संपूर्ण कानून संहिता के बारे में एक समेकित इकाई के रूप में सोचते हैं, तो हम देखते हैं कि अध्याय 12 के साथ चुनी हुई जगह का परिचय कैसे हुआ, और अब हम समाप्त करने जा रहे हैं अध्याय 26 में कानून संहिता फिर से चुने हुए स्थान के साथ। तो, यह वास्तव में अच्छा बहीखाता है। अध्याय 26 में दो अलग-अलग धार्मिक उत्सव या समारोह शामिल हैं जिन्हें इस्राएलियों को भूमि पर जाने के बाद करने के लिए कहा जाता है। तो, आइए व्यवस्थाविवरण 26 पर एक नजर डालें।

दो धार्मिक अनुष्ठान

इसलिए हम सबसे पहले दो अलग-अलग कानून संहिताओं पर ध्यान देंगे; हम इनमें से प्रत्येक को पढ़ेंगे, या कानून संहिताओं को नहीं, बल्कि धार्मिक अनुष्ठानों को पढ़ेंगे। अध्याय 26 इस प्रकार शुरू होता है। "तब जब तुम उस देश में प्रवेश करो जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें निज भाग करके देता है, और तुम उसके अधिक्कारनी हो कर उस में रहने लगे, तब भूमि की सारी उपज में से जो कुछ तुम ले आओगे, उसका कुछ पहिला भाग ले लेना। अपने उस देश में से जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है, उसको टोकरी में रखकर उस स्थान पर जाना जहां तेरा परमेश्वर यहोवा अपना नाम स्थापित करने के लिये चुन ले।

अतः तुम एक बार फिर भूमि से उपज लौगें। हम इस तथ्य पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित कर रहे हैं कि जिस भूमि पर वे जा रहे हैं, वह उन्हें उनके द्वारा किए गए किसी भी काम के आधार पर नहीं मिल रही है। वे इसे भगवान से उपहार के रूप में प्राप्त कर रहे हैं, और उन्हें उस भूमि से उपज लेनी चाहिए।

अब, यह बिल्कुल नहीं बताता कि वह उपज क्या होगी, लेकिन हम शायद अनुमान लगा सकते हैं कि इसमें वह सब कुछ होगा जो कृषि कैलेंडर में शामिल है। तो, पिछले व्याख्यानों में हमने जो कुछ भी बात की है वह भूमि का इनाम है। "इसे एक टोकरी में रखो और चुनी हुई जगह पर ले आओ।"

पद 3 में, "तू उस समय के याजक के पास जाकर उस से कहना, 'मैं आज अपने परमेश्वर यहोवा से कहता हूँ, कि मैं उस देश में प्रवेश कर गया हूँ, जिसके विषय में यहोवा ने हमारे पूर्वजों से शपथ खाई थी। हमें दे दो।"

अब, जो दिलचस्प है वह इस पहले धार्मिक आदेश के साथ है, जो हम वास्तव में देख रहे हैं वह यह है कि हर किसी को उस दिन को पहचानना आवश्यक है जब वे, व्यक्तियों के रूप में उस भूमि में प्रवेश कर चुके हैं जो भगवान ने उन्हें दी है। तो, एक व्यक्ति के रूप में उन्हें वास्तविक ज़मींदार से, ईश्वर से विरासत मिली है। और इसलिए, यह व्यक्तिगत मान्यता है कि मैं ही हूँ, मैं अंदर आया हूँ।

पहला पंथ

और फिर, आयत 4 में, यह कहा गया है, "तब याजक टोकरी को तुम्हारे हाथ से ले लेंगे और उसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की वेदी के साम्हने रख देंगे।" और जैसे ही हम श्लोक 5 से शुरू करते हैं, श्लोक 5 से 10 तक, हमारे पास वह है जिसे कुछ लोग पंथ कहते हैं। यह वास्तव में इस्राएलियों के मुक्ति इतिहास का पाठ है। लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप ऐसा करें जैसे मैं पढ़ता हूँ या जैसे आप पढ़ते हैं, और मेरे साथ चलते हैं, इस पंथ में उपयोग किए जाने वाले सर्वनामों पर ध्यान दें। तो, यह सिर्फ एक बात नहीं है, उन चीजों को याद रखें जो आपके भगवान ने की हैं, बल्कि हम वास्तव में

पा रहे हैं कि एक लिखित शब्दावली है, यही आपको कहना चाहिए। जैसे ही हम श्लोक 5 से श्लोक 10 तक जाते हैं, सर्वनामों पर ध्यान दें।

"तू अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने उत्तर देना, 'मेरा पिता भटकता हुआ अरामी था।' तो, यह वास्तव में एक अजीब वाक्यांश है। 'मेरे पिता एक घुमंतू अरामी थे।' तो, वास्तव में यह किसकी बात कर रहा है? अधिकांश लोग जो कहते हैं वह संभवतः इब्राहीम या जैकब है। ये दोनों किसी समय मेसोपोटामिया क्षेत्र से बाहर आए थे, इसलिए इन्हें अरामी उपाधि मिली। और अन्य विद्वानों ने भी इस तथ्य पर गर्व महसूस किया है कि 'मेरे पिता एक भटकते हुए अरामी थे।' यह शब्द अरामी इस्राएल के इतिहास में बहुत बाद में आया, कि अरामी इस्राएलियों के शत्रु थे। तो, यह पंथ एक बहुत ही प्रारंभिक दस्तावेज़ होना चाहिए। यह बहुत प्रारंभिक स्रोत से आया है, जब अरामी लोग इस्राएलियों के बहुत कट्टर दुश्मन थे, उनके लिए यह कहना, 'मेरा पिता यह भटकता हुआ अरामी था।

हम यह देखने जा रहे हैं कि चाहे वह इब्राहीम हो या जैकब, यह किसी भी तरह से काम करता है। यह मूलतः कुलपतियों की बात कर रहा है। तो, यह इस कहानी को बताने का एक तरीका है। और पंथ में 'भटकते अरामी' कहकर, यह किसान जो जमीन से यह सारी उपज लेकर आया है, याद कर रहा है कि प्राचीन अतीत में, वे भूमिहीन थे। तो, भटकनेवाले अरामी, जिसके पास भूमि न हो, परदेशी, परदेशी, भूमिहीन।

"तो, मेरा पिता एक भटकता हुआ अरामी था, और वह मिस्र चला गया और वहां कुछ संख्या में प्रवास किया। लेकिन वहां, वह एक महान, शक्तिशाली और एक आबादी वाला राष्ट्र बन गया। और मिस्रियों ने हमारे साथ कठोरता से व्यवहार किया और हमें पीड़ित किया, कठोर दबाव डाला हम पर परिश्रम करो। तब हम ने अपने पितरोंके परमेश्वर यहोवा की दोहाई दी। यहोवा ने हमारी आवाज सुनी, और हमारे क्लेश, हमारे परिश्रम, और हमारे अन्धेर को देखा। और यहोवा ने बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से हमें मिस्र से निकाल लाया . और बड़े भय और चिन्हों और चमत्कारों के द्वारा वह हम को इस स्थान पर ले आया, और हमें यह देश दिया, जिस में दूध और

मधु की धाराएं बहती हैं। अब देख, मैं भूमि की उपज का पहिला भाग तेरे पास ले आया हूं, हे भगवान, मुझे दिया है।"

अब, यह श्लोक 10 का अंत नहीं है। लेकिन क्या आपने उन सर्वनामों पर ध्यान दिया? तो, इस पंथ में, जब किसान आता है और जमीन का पहला फल देता है और कहानी सुनाता है। "यह मेरे पिता हैं," और फिर "हम" और "हमारे," "हम मिस्र में थे, मिस्र ने हम पर अत्याचार किया, हमने प्रभु की दोहाई दी।" तो, हम फिर से देख रहे हैं कि व्यवस्थाविवरण पूरे समय क्या कर रहा है। एक व्यक्ति के रूप में आप और आप बहुवचन, संपूर्ण व्यक्ति समूह का संयोजन।

व्यवस्थाविवरण यह सुनिश्चित करता है कि इस पंथ में, जब लोग इस तथ्य का जश्न मनाने के लिए जाते हैं कि उन्हें भगवान से यह उपहार मिला है, तो उन्हें व्यक्तियों के रूप में आने की आवश्यकता होती है, लेकिन वे मानते हैं कि वे, पूरी आबादी के रूप में, हम सभी, न कि केवल जो आज जीवित हैं, लेकिन अतीत में हम सभी ऐसे हैं जिन्होंने हमें यहां लाने के लिए भगवान की कृपा और भगवान का काम प्राप्त किया है।

और फिर अंत में सर्वनाम कहता है. तो "मुझे आना होगा।" इसलिए एक व्यक्ति के तौर पर मैं भी अब प्रतिक्रिया दे रहा हूं।

तो, इस पंथ के माध्यम से या यह मुक्ति इतिहास है, हम देखते हैं कि लोग कैसे पहचानते हैं कि उनका इतिहास, उनकी कहानी, भूमिहीन भटकते आर्मियन पूर्वजों से भूमि पर आने तक की कहानी है। तो उनको यह अच्छी भूमि का उपहार दिया गया है। वे गुलाम बनने से मुक्त होने की ओर बढ़े। तो, यह पंथ उनकी पूरी कहानी उस बिंदु तक बताता है जहां उन्हें एक महान उपहार दिया गया है; वे अब ईश्वर को प्रेम से उत्तर दे रहे हैं।

यह स्थान और यह भूमि

तो, एक अन्य प्रकार की दिलचस्प बात जो दिखाई देती है वह पद 9 में है। इसलिए, हम इस पंथ की शुरुआत से पहले से ही जानते हैं कि किसान, लोगों को उस स्थान पर जाना आवश्यक है जिसे भगवान ने चुना है। इसलिए यह समारोह चुनी हुई जगह पर हो रहा है।

तो, हम सामान्य स्थान जानते हैं, और श्लोक नौ में, हमारे पास है, "और वह हमें इस स्थान पर ले आया है और हमें यह भूमि दी है।" तो, हमारे पास दो वाक्यांश हैं जो एक दूसरे के समानांतर प्रतीत होते हैं। तो, हमकोम हज़ेह , "यह जगह है।" इसलिए भगवान हमें इस स्थान पर लाए हैं। और हमें हेरेट्ज़ दिया है हज़ेह अर्थात "यह भूमि।"

अब, हमकोम एक ऐसा शब्द है जिसका प्रयोग व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में काफी मात्रा में किया गया है। और प्रश्न का एक भाग यह है कि श्लोक 9 में "यह स्थान" क्या है? खैर, हम कह सकते हैं कि हम जानते हैं कि बड़ा संदर्भ यह है कि वे चुनी हुई जगह पर खड़े हैं। तो, हम कह सकते हैं कि इस श्लोक का अर्थ है कि भगवान ने हमें लाया है, या मैं अब इस स्थान पर, इस चुने हुए स्थान पर आया हूँ, और भगवान ने हमें यह भूमि भी दी है। और यह पूरी तरह से समझ में आएगा।

या आप ऐसा इसलिए कह सकते हैं क्योंकि ये वाक्यांश एक-दूसरे के समानांतर हैं। शायद यहाँ हमकोम भी हारेत्ज़ है। तो यह हो सकता है कि भगवान हमें इस स्थान पर, यानी दूध और शहद से बहने वाली इस भूमि पर ले आए हों। या हो सकता है कि अस्पष्टता जानबूझकर हो। जैसा कि हमने चयनित स्थान और सभी वितरित शहरों के बारे में बात की है, हमने जो देखा है, हम इस पूरे कानून कोड में देख रहे हैं कि शहर चुने गए स्थान से कैसे जुड़े हुए हैं, ऐसे नेता कैसे हैं जो दोनों स्थानों पर कार्य कर रहे हैं, दोनों स्थानों में कैसे गतिविधियाँ हुईं, कैसे न केवल लेवीय और चुने हुए स्थान पर मौजूद पुजारी, बल्कि सभी लोगों को भगवान के सामने पवित्र होने के लिए बुलाया गया है। वे सभी इस तरह से खा रहे हैं जिससे पता चलता है कि वे पवित्र हैं और उन्हें अलग करके अलग रखा गया है।

अपने शहरों में उनके व्यवहार को इन शब्दों से चिह्नित किया जाता है, जैसे इन शब्दों को चुने हुए स्थान पर रखा जाता है।

इसलिए, व्यवस्थाविवरण ने, हालांकि, पहचान योग्य रूप से, एक चुने हुए स्थान को अलग रखा है जहाँ भगवान का नाम रखा गया है। कि यह उसका निवास स्थान है, जो पवित्र है क्योंकि लेवीय वहाँ उसके सामने सेवा करते हैं। यह पवित्र है क्योंकि यह एकमात्र स्थान है जहाँ वे अपना

बलिदान ला सकते हैं। लेकिन व्यवस्थाविवरण ने यह कहने में बहुत समय बिताया है कि पवित्रता केवल एक ही स्थान तक सीमित नहीं है। तो सिर्फ इसलिए कि भगवान का नाम चुने हुए स्थान पर है और बलिदान चुने हुए स्थान पर है, और लेवी चुने हुए स्थान पर है, इसका मतलब यह नहीं है कि बाकी पूरी भूमि पवित्र नहीं है। यह सब पवित्र है क्योंकि यह सब परमेश्वर के नियम के अंतर्गत आता है।

तो, अस्पष्टता सुनो; भगवान हमें इस स्थान पर लाए हैं और हमें यह भूमि दी है, दूध और शहद से बहने वाली भूमि। "यह स्थान" चुने हुए स्थान को संदर्भित कर सकता है, या यह भूमि को संदर्भित कर सकता है। लेकिन किसी भी तरह से, जो पवित्र है और जो पवित्र नहीं है उसकी रेखाएँ फिर से धुंधली हो गई हैं। और ऐसा प्रतीत होता है कि इस पंथ में भी जिसे इस्राएली उद्धृत कर रहे हैं जब वे चुने हुए स्थान पर हैं, एक मान्यता है कि पवित्रता चुने हुए स्थान से निकलकर उनके राष्ट्र के बिल्कुल किनारों तक, पूरे देश में बहती है, जो दूध और शहद के साथ बह रहा है।

दूसरा पंथ - गरीबों के लिए दशमांश

तो, इस पहले पंथ के बाद, हम अध्याय 26 में दूसरे पंथ पर पहुँचते हैं। इसलिए, दूसरे पंथ को "गरीब दशमांश" माना जाता है। तो, यह फिर से एक और दशमांश है, लेकिन यह इसके लिए एक अद्वितीय दशमांश है; यह सामान्य दशमांश नहीं है जो लोग हर साल चुने हुए स्थान पर देते हैं।

तो, हम श्लोक 11 से शुरू करेंगे। ठीक है, मैं श्लोक 10 के अंतिम छोर से शुरू करूँगा। "और तुम इसे अपने परमेश्वर यहोवा के सामने रखना, और अपने परमेश्वर यहोवा के सामने दण्डवत् करना। और तुम, और लेवीय और तुम्हारे बीच में रहने वाले परदेशी उस भलाई के कारण जो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें और तुम्हारे घराने को दी है, आनन्द करेंगे। वह वास्तव में पहले वाले से संबंधित है।

इसलिए, पद 12, "तीसरे वर्ष अर्थात् दशमांश देने के वर्ष में जब तू अपनी उपज का सारा दशमांश चुका चुका हो, तब उसे लेवीय, परदेशी, अनाथ, और विधवा को देना। अपने नगरों में खाओ, और तृप्त होओ; और अपने परमेश्वर यहोवा के सामने कहना, कि मैं ने आपके घर में से

पवित्र भाग निकाल लिया है, और लेवीय, परदेशी, अनाथ, और विधवा को उसके अनुसार दे दिया है अपनी सभी आज्ञाएँ जो तू ने मुझे दी हैं। मैं ने तेरी किसी भी आज्ञा का उल्लंघन या विस्मृति नहीं की है।"

इसलिए, इससे पहले कि हम आगे बढ़ें, हम देखेंगे कि यह तीसरा वर्ष है।

और यह दशमांश देने का तीसरा वर्ष है। तो, वर्ष का एक दशमांश चुने हुए स्थान पर जाता है; वर्ष दो दशमांश चुने हुए स्थान पर जाता है। वर्ष 3 चुने हुए स्थान पर नहीं जाता बल्कि उनके नगर द्वारों में आपस में बाँट दिया जाता है।

और इस दशमांश के प्राप्तकर्ता कौन हैं? खैर, एक और दो साल में, जब यह चुने हुए स्थान पर जाता है, तो लेवी प्राप्तकर्ता होते हैं। यह यह पहचानने का एक बहुत ही सक्रिय प्रदर्शन है कि ईश्वर भूमि का मालिक है, और आप उसे वापस दशमांश दे रहे हैं। लेकिन इस तीसरे वर्ष में, आप पहचान रहे हैं कि इस बार आप समुदाय के भीतर हाशिए पर मौजूद लोगों को खिलाने और उनकी देखभाल करने की जिम्मेदारी ले रहे हैं।

अब, दिलचस्प बात यह है कि संपूर्ण व्यवस्थाविवरण में एक क्रिया शब्द का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ है "संतुष्ट करना।" और समस्त व्यवस्थाविवरण में, ईश्वर ही वह है जिसके बारे में कहा जाता है कि वह अपने लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करता है। इस प्रकार पूरे व्यवस्थाविवरण में बार-बार दोहराया गया है, ईश्वर इस्राएलियों की हर आवश्यकता को पूरा करता है। और अब, इस विशेष त्योहार के साथ, लोग अपने शहर के भीतर उन लोगों की जरूरतों को पूरा कर रहे हैं जो जरूरतमंद हैं।

इसलिए, मैं श्लोक 12 को फिर से पढ़ूंगा, "तीसरे वर्ष अर्थात् दशमांश देने के वर्ष में जब तू अपनी उपज का सारा दशमांश चुका चुका हो, तब उसे लेवीय, परदेशी, अनाथ को देना, और विधवा को।" वे सभी लोग जिनके पास ज़मीन नहीं है, वे लोग आम तौर पर सबसे गरीब और सबसे हाशिए पर थे।

"ताकि वे तेरे नगरों में भोजन करें, और तृप्त हों।" इसलिए, इस त्योहार के भीतर, जब आप आते हैं और भगवान से वादा करते हैं, तो मैं यह सुनिश्चित करने के लिए बहुत सावधान रहता हूँ कि मैंने अपने घर से पवित्र हिस्सा निकाल लिया है और इसे अपने आसपास के गरीबों और जरूरतमंदों को दे रहा हूँ। यह इस्राएलियों के लिए यह कहने का एक तरीका है, "भगवान, मैं मानता हूँ कि आपने हमारी सभी जरूरतों को पूरा किया है, और मैं अब आपके कार्यों की नकल करूँगा और प्रतिक्रिया में वापस आऊँगा और वही करूँगा।"

इसका अर्थ यह है कि यह अभिनय उतना ही पवित्र है जितना चुने हुए स्थान पर दशमांश ले जाना। तो, यह पवित्र कार्य सिर्फ यह नहीं है कि आप भगवान के प्रति क्या करते हैं, बल्कि यह भी है कि आप अपने आस-पास के लोगों के साथ कैसा व्यवहार करना चुनते हैं।

उत्सव का शेष भाग

तो, हम उस विशेष त्योहार के शेष भाग को श्लोक 14 में पढ़ेंगे। "मैंने शोक करते समय उसमें से कुछ नहीं खाया, न ही मैंने अशुद्ध होने पर उसमें से कुछ निकाला, और न ही उसमें से कुछ भी मृतकों को अर्पित किया। मैंने अपने परमेश्वर यहोवा की बात सुनी। जो जो आज्ञा तू ने मुझे दी है उसके अनुसार मैं ने किया है। तो, "मैंने इसे एक साथ इकट्ठा नहीं किया है" का मतलब है कि मैंने इस दशमांश को दूषित नहीं किया है, लेकिन यह एक पवित्र दशमांश है। यद्यपि यह चुने हुए स्थान पर नहीं दिया जा रहा है, यह शहर के फाटकों पर लोगों को दिया जा रहा है।

श्लोक 15, "स्वर्ग से अपने पवित्र निवास स्थान पर दृष्टि करके अपनी प्रजा इस्राएल को उस भूमि पर से आशीर्वाद दे, जो तू ने हमें दी है, अर्थात् जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं, जैसा तू ने हमारे पुरखाओं से शपथ खाकर कहा है। आज के दिन तेरा परमेश्वर यहोवा आज्ञा देता है तू इन विधियों और नियमोंका पालन करना। इसलिये तू अपने सारे मन और अपने सारे प्राण से उनके मानने में चौकसी करना।

कानून संहिता का समापन

अब, अंतिम तीन छंद वास्तव में इनमें से किसी भी उत्सव में फिट नहीं बैठते हैं, लेकिन वे कानून संहिता की संपूर्णता को समाप्त करने के लिए बहुत अच्छा काम करते हैं। तो, हम पाएंगे कि हम घोषणा, दर्शकों और कार्रवाई से शुरुआत करते हैं।

तो, श्लोक 17, जैसे ही हम कानून संहिता से संबंधित हर चीज को बंद कर देते हैं। "तुमने आज प्रभु के सामने घोषणा कर दी है।" तो, तुम, "इस्राएलियों ने अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने घोषणा की है," जो श्रोता है। "कि तुम उसके मार्गों पर चलो, उसकी मूर्ति, उसकी आज्ञाओं, और उसके नियमों का पालन करो, और उसकी वाणी सुनो। यहोवा ने आज यह घोषणा की है।" इसलिए, हमने इस्राएलियों को प्रभु के सामने घोषणा करने को कहा कि वे क्या करेंगे। और अब हमारे पास प्रभु है जो लोगों को घोषणा कर रहा है कि वह क्या करेगा। "प्रभु ने आज तुम्हें अपनी प्रजा, एक बहुमूल्य संपत्ति घोषित किया है, जैसा कि उसने तुमसे वादा किया था, कि तुम्हें उसकी सभी आज्ञाओं का पालन करना चाहिए और वह तुम्हें उन सभी राष्ट्रों से ऊपर रखेगा, जिन्हें उसने प्रशंसा, प्रसिद्धि के लिए बनाया है। और आदर करो कि तुम अपने परमेश्वर यहोवा के वचन के अनुसार उसके लिये समर्पित लोग ठहरोगे।

और फिर हम कानून संहिता को समाप्त कर देते हैं। इसलिए, हम परमेश्वर और उसके लोगों के बीच इस समझौते पर पहुँचे। और परमेश्वर ने कहा, जब तक लोग उसकी बात मानेंगे और उसकी आज्ञाओं और उसकी व्यवस्था को पूरा करेंगे, वह उन्हें स्थापित करेगा, और वे सभी राष्ट्रों के लिए एक उदाहरण होंगे, और फिर कानून संहिता बंद हो जाती है।

व्यवस्थाविवरण 27-29 का पूर्वावलोकन

इसलिए, जब हम अध्याय 27, 28, और 29 में प्रवेश करते हैं, तो अब हम इस मान्यता पर वापस आते हैं कि इस्राएली मूसा के साथ भूमि के बाहर खड़े होकर देख रहे हैं। इसलिए, हमारे पास कानून संहिता के दौरान यह मौका है 12-26 कहना है, हम कैसे कार्य करें? परमेश्वर का अनुसरण करने का क्या अर्थ है? खाना, नेतृत्व स्थापित करना, सामाजिक संरचना और सामाजिक नैतिकता कैसी दिखती है? हम ज़मीन पर यह कैसे करते हैं?

हम उस पर चर्चा करते रहे हैं, और अब हम एक बार फिर देश के बाहर इस्राएलियों के साथ खड़े हैं। और हम कुछ हद तक उसी पर लौटते हैं जैसा हमने अध्याय 1-3 में व्यवस्थाविवरण की शुरुआत में देखा था। तो, हम इसे अगले व्याख्यान में शामिल करेंगे।

यह डॉ. सिंथिया पार्कर और व्यवस्थाविवरण की पुस्तक पर उनका शिक्षण है। यह सत्र 11, व्यवस्थाविवरण 26 है।